में भी जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा स्थापित है।

इन मंदिरों का विवाद उच्चतम न्यायालय में विराचाधीन है। यहाँ पर भगवान को हीरे की आंगी यदाकदा चढाई जाती है और चैत्र कृष्णा 8 का मेला लगता है, वरधोडा भी निकलता है। वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ती है।

मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर श्री चारभुजा जी का मंदिर संवत् 1746 का स्थापित है। एवं पीछे शिव मंदिर स्थापित है।

इस मंदिर की देख रेख राजस्थान सरकार की ओर से देवस्थान विभाग के आयुक्त व स्थानीय स्तर पर सहायक आयुक्त करते हैं।

सम्पर्क :– आयुक्त 0294–2576130

नोट :– सर्वे कार्य पूरा न हो सका और शीघ्रता से प्रतिमा के वर्णन में त्रुटि होंना सम्भव है।

तुच्छ प्रलोभन मनुष्य के मन को बहुत लुभाते हैं। जहाँ देखों वहाँ भीड़-भाड़, भेंट-सौगात, भोजन-समारोह, बाजे-गाजे, जुलूस, साज-सज्जा और ऐसे ही अन्य बड़े-बड़े तामझाम अब धर्म के पर्याय बन गये हैं। जहाँ ये सब कम होते हैं। वे आयोजन सामान्य समझे जाते हैं। इसीलिये सभी में सर्वोपरि दिखने-दिखाने की अंतहीन होड़ लगी है। धर्म अब 'क्वांटिटी' में होता है, परन्तु उसकी 'क्वालिटी' गायब हो जाती है। अपनी बुराइयों के परिष्कार, अन्तरवृत्तियों के निरोध और चेतना के स्तर पर आध्यात्मिक जागरण के प्रयासों के बिना इन धार्मिक आयोजनों का कितना औचित्य है? कभी अकेले में अपने विवेक को जगाकर यह सवाल पूछिये।

श्री जैन दादावाड़ी (केसरियाजी तीर्थ) ऋषभदेव

(श्री अभयदेव सूरि, श्री जिनदत्त सूरि, मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि, जिन कुशल सूरि)

यह दादावाड़ी श्री केसरिया जी तीर्थ मंदिर जाने के द्वितीय दरवाजा से बाहर निकलते समय दाईं ओर मुख्य बाजार के किनारे स्थित है।

इस मंदिर परिसर के चारों ओर चार दीवारी बनी हुई है और चारो ओर फाटक (दरवाजे) लगे हुए है। कहा जाता है कि मंदिर की भूमि अधिक थी लेकिन चारों ओर अतिक्रमण हो गया है। वर्तमान में बस स्टेण्ड से भी सीधा मार्ग बना हुआ है।

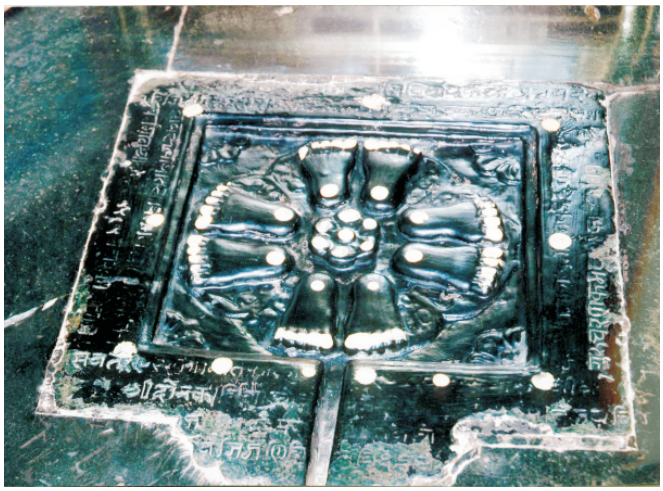

खरतरगच्छीय चारों गुरूओं के चरण पादुकायें एक श्याम पाषण की देवरी में स्थापित है।

श्री जैन दादावाड़ी श्री ऋषभदेव तीर्थ श्री अभयदेव सूरि, श्री जिनदत्त सूरि, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि, श्री कुशल सूरि, के श्री चरण पादुकायें श्याम पाषाण की चौकी पर स्थापित है। जिसका आकार 15X13'' है। इसके चारों ओर यह लेख है :–

संवत् 1912 का मिति फागुन वदि 7 तिर्थो गुरू वासरे श्री धुलेवानगरे श्री क्षेयकीर्ति शाख्योद्भव महोपाध्याय श्री रामविजय जी गणि शिष्य महोपाध्याय शिवचंद गणि शिष्य चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचंद युतेन श्री सत्गुरू **चरण कमलानि** कारितानि महोत्सव कृत्वा प्रतिष्ठापितानि च वर्तमान श्री वृहर्तखरतर गच्छ भट्टारकाज्ञय श्री अभयदेवसूरि जिनदत्तसूरि **जिन चंद्र सूरि श्री जिन कुशल सूरिणां** चरणान्यासः

दादावाड़ी की जमीन के बारे में जानकारी करने की आवश्यकता है।

सम्पर्क सूत्र – श्री कीकाभाई प्रेमचन्द ट्रस्ट, ऋषभदेव।

02907–230536

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ऋषभदेव

संचालित- सर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट

यह मंदिर ऋषभदेव (केशरियाजी तीर्थ) के सार्वजनिक बस स्टेण्ड से पूर्व की ओर स्थित है। सर कीकाभाई प्रेमचंद महाजन गुजरात प्रांत के रहने वाले थे और केसरियाजी तीर्थ के प्रति विश्वास एवं श्रृद्धा रखने वाले भक्त थे। उनकी कोई भी योजना जो मस्तिष्क में आती उसको केसरियाजी में आकर मनोकामना करते और इनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती। इसी क्रम में उन्होंने अनुभव किया कि मंदिर ट्रस्ट (देवस्थान नियंत्रण वाली) की धर्मशाला में समुचित व्यवस्था नहीं होने से उन्होंने कामना की, इस तीर्थ भूमि पर आगन्तुक यात्रियों के लिये आधुनिकतम रेस्ट हाउस का निर्माण व पूजा पाठ के लिए विशाल मंदिर का निर्माण कराना चाहिये। उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने भूमि क्रय की लेकिन उनका अकस्मात् निधन हो जाने से वे निर्माण कार्य नहीं करा सके लेकिन उनकी पत्नी लेडी लीलिबेन (अंग्रेजी महिला) ने अपने पति के सभी संकल्पों को योजना बद्ध तरीके से कार्यान्वित किये और सर्वप्रथम सन् 1958 ईस्वी में चार शयन कक्ष का एक रेस्ट हाउस तैयार कराया और सन् 1960 में ट्रस्ट बनाकर पंजीकरण करा लिया गया। वर्तमान धर्मशाला निर्माण करने में खरतरगच्छीय आचार्य श्री कांतिसागर सूरीश्वरजी के प्रमुख शिष्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी का आशीर्वाद प्राप्त है और 100 कमरे निर्मित हो गये है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं एक कमरेनुमा मंदिर में स्थापित हैं :–

1. श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 41" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– "खरतरगच्छे आचार्य श्री जिनेश्वर सूरि नवांगी वृतिकार अभयदेव सूरि दादा जिनदत्त सूरि दादा मणिधारी जिनचंद्र सूरि दादा जिनकुशलसूरि दादा जिनचंद्र सूरि गणनायक श्री सुखसागर आचार्य **श्री जिनकांति सागर** सूरिश्वर शिष्येन जहाज मंदिर गजमंदिर के अधिष्ठाता उपाध्याय मणिप्रभसागरेण प्रतिष्ठिंत रिखभदेव नगरे श्री केशरियाजी तीर्थे अभिनवं केशरिया नाथ बिंब वि.सं. 2058 माघ शुक्ला दशम्यां शुक्रवासरे मालपुरा तीर्थे श्री सांचोर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघेन कारापितं। शुभ भवतु श्री संघस्य दिनांक 22–2–2002
2. श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 21" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– श्री खरतरगच्छे आचार्य श्री कांतिसागर सूरि शिष्य उपाध्याय श्री मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठितं कारापितं श्री सुमतिनाथ बिंब सं. 2058 माघ शुक्ला 10 शुक्रवासरे मालपुरा तीर्थे श्री सांचोर तीर्थ
3. "श्री पद्भ प्रभ स्वामी की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 21" ऊँची प्रतिमा है। इस पर

लेख हैः– श्री खरतरगच्छे आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरि शिष्य उपाध्याय **श्री मणिप्रभ सागरेण** प्रतिष्ठितं रिषभदेव नगरे श्री केसरियाजी तीर्थ श्री पद्मप्रभ स्वामी बिंब वि.सं. 2058 माघ शुक्ला दश्म्यां शुक्रवासरे मालपुरातीर्थ श्री सांचोर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघस्य"

पश्चिमी दीवार के एक आलिए में

4. श्री जिनदत्तसूरि की श्वेत पाषाण की 15" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः–

"श्री खरतरगच्छे आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरि शिष्य उपाध्याय **श्री मणिप्रभ सागरेण** प्रतिष्ठितं रिषभदेव नगरे श्री केसरियाजी तीर्थ श्री दादा जिनदत्तसूरि मूर्तिः सं. 2058 माघ शुक्ला दशम्यां पासुभाई शाह नि. इन्दौर"

पूर्वी दीवार के एक आलिए में– "श्री नाकोड़ा भैरवः की पीत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख हैः श्री नाकोड़ा भैरव श्री मूलचंद छोगालाल जी साचौर निवासी पारसमल रंमा देवी

उत्थापित चल प्रतिमाएं (धातु की)

1. श्री शीतलनाथ भगवान की 8" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

"वि.सं. 2049 माघ शु. 13 सांचोर नगरे गणि मणिप्रभ सागरेण खरतरगच्छे प्रति. श्री शीतल जिन बिंब प्यारीबेन भगवानदासजी मालूरामसर निवासी कारापितं

2. श्री वासुपूज्य भगवान की 8" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

"वि.सं. 2049 माघ शु. 13 सांचोर नगरे गणि मणिप्रभ सागरेण खरतरगच्छे प्रति. श्री वासुपूज्य बिंब मुनीबेन मूंगराज जी बेसडिया परि. कारापितं

3. श्री धर्मनाथ भगवान की 8" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

"वि.सं. 2049 माघ शु. 13 सांचोर नगरे गणि मणिप्रभ सागरेण खरतरगच्छे प्रति. श्री धर्मनाथ बिंब जमनाबेन श्री सोमराज जी बेसडिया परि. कारापितं

4. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4" आकार का है। इस पर लेख है :– श्री कांतिसागर जी मणिप्रभ सागर जी के उपदेश से वि.सं. सप्रेम भेंट बाड़मेर (राज)

5. श्री महावीर भगवान की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– श्री महावीर बिंब जैन खरतरगच्छे संघेन कारापितं।

निर्माणाधीन योजना

1. गज मंदिर– 18 विशाल (श्वेत पाषाण के) हाथी का कार्य प्रगति पर है
2. श्री जिनदत्तसूरि, जिनचंद्रसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनचंद्र सूरि जी की दादावाड़ी–भूतल पर –

इस सभी प्रकार के कार्य की देखरेख सर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट मण्डल द्वारा की जा रही है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री चंद्रसिंह जी लोढ़ा व मंत्री श्री गजेन्द्र भंसाली हैं।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ शुक्ला 14 को चढाई जाती है।

सम्पर्क सूत्र – श्री चन्द्रसिंह लोढ़ा अध्यक्ष – 9414162035,

श्री गजेन्द्र भन्साली मंत्री – 9414166391, कार्यालय (ऋषभदेव) 02907 – 230536

श्री आदिनाथ (ऋषभदेव) भगवान का मंदिर, केसरियाजी

संचालित : (पट्टशाला जैन मंदिर केसरिया जी)

यह शिखरबंद मंदिर धुलेवा नगर (केसरियाजी) पगलिया तीर्थ स्थल के पास भूमि सतह से ऊँचाई पर स्थित है। इस मंदिर को बनाने के लिए श्री पूनमचंद चन्द्रभान सिंघवी निवासी तखतगढ़ ने सन् 1975 में भूमि क्रय की और करीब 20 वर्ष बाद मंदिर निर्माण कार्य प्रारम्भ कर मंदिर निर्मित हो जाने पर सम्वत् 2058 फाल्गुन कृष्णा 5 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। निर्माता की मूर्तियाँ मंदिर में प्रवेश करते समय दोनों ओर स्थापित है। केसरिया जी तीर्थ परिसर में स्थापित श्री जगवल्लम पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के सभामण्डप में विभिन्न तीर्थ स्थलों के पट्ट लगाने का प्रस्ताव था लेकिन तीर्थ विवाद में होंने से प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हो सका। उस राशि को सुरक्षित रख दिया गया जो वर्ष व्यतीत होने पर बढ़ती गई तथा उस राशि का उपयोग मंदिर का निर्माण करने में लिया गया। इस मंदिर को बनवाने का निर्णय उस समय लिया गया जबकि केसरिया जी तीर्थं में आवाजाही कम हो गई थी और अव्यवस्था फैली हुई थी इसलिये तीर्थ के दर्शन के लिये मूल मंदिर बनाने का संकल्प लिया। मंदिर निर्माण करने के लिए आचार्य श्री हेमचन्द सूरि जी व आचार्य श्री जितेन्द्र सूरि जी महाराज के सदुपदेश व महाराज **श्री सत्वभूषण** वि. जी महाराज सा. की प्रेरणा से निर्मित हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है:–

1. श्री ऋषभदेव भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 41" ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा के पीछे पंच तीर्थी परिसर बना हुआ है:– इस पर लेख है:–

"विक्रम संवत 2058 फाल्गुन वदि 5 रविवारे धुलेवा नूतन श्री केशरिया नाथ (ऋषभदेव) बिंब प्रतिष्ठितं तपोगच्छीय विजय **प्रेमसूरि भुवनभानु सूरि** पट्टधर विजय **जयघोष सूरि** आ.वि. **जितेन्द्रसूरि भ्याः** महामहोत्सव पूर्वक कारितः

व वैराग्य देशनादक्ष प.पू. आ. हेमचन्द्र सूरिश्य शिष्य गणि श्री अपराजित वि. शिष्य मुनि सत्वभुषण वि. साध्वी श्री सिद्धिकृपा, जिनकृपा वीरकृपा यशक्रिया श्री प्रेरणायां कांतिलाल रूकमणि बेन विजयराज कलाबेन, रमेश कुमार मधुबेन जयपाल निशा पूरण वीणा, संगीता हेमन्त लीना विपिन दिवेश इशान चिराग प्रत्युष जयलि स्व. हीराचन्द मधुमसु स्व. गुणवंती लता रेखा राकेश ऋतु अशीता दीपा रूचिता प्रांजल नुपुर बेटा–पोता पोत्री प्रपोत्री स्व. श्री केशरीचन्द जी जडावी बाई (धापुबाई) पुनमचंद जी दौलीबाई चन्द्रभान जी जोधी बाई जयरूपजी संघवी परिवारेण तख्तगढ़ राज. केशरीमल कान्तिलाल मुम्बई दुकान वि.सं. 2058, 3–3–2002 यह प्रतिमा आकर्षक एवं चमत्कारी है और **इससे वर्ष में कई बार अमीझर प्राप्त होता है।**

2. श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 25" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

वि.सं. 2058 फाल्गुन वदि 5 धुलेवा नगर श्री सुविधिनाथ जिन बिंब इदं प्रतिष्ठितं तपा. आ. विजय प्रेमसूरि भुवनभानुसूरि पट्टे अ.वि. जयघोष सूरि आ. विजय जितेन्द्रसूरिश्यः महा महोत्सव पूर्वक कारितं स्वं. गुणवंती बेन रणजीतकुमार जी सुपुत्री हिमानी पलक इति बेटा पोत्र–पोत्री ताराचंद जी संघवी लाडबाई राज. कुन्दनमल अमृतीबेन बेटा निहालचंद कुण्डल गोत्र परमार। "

3. श्री महावीर भगवान (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 25" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

वि.सं. 2058 फाल्गुन वदि 5 धुलेवा नगर श्री महावीर स्वामी बिंब इदं प्रतिष्ठितं धूलेवानगरे प्रसिद्ध केशरियाजी तीर्थ नूतन जिनालय बिंब प्रतिष्ठितं तपोगच्छीय श्री प्रेमसूरीश्वर जी भुवनभानुसूरीश्वर पट्टधर वि. **जयघोष सूरि** आ. विजय जितेन्द्रसूरिश्यः महा महोत्सव पूर्वक कारितं च. श्री शांतिलाल फूलचन्दजी महेन्द्रकुमार निलेश हितेश पीयूष कुणाल बेटा–पोता सा. फूलचंदजी पूनमचन्दजी परिवार।

उत्थापित चल प्रतिमाएं (धातु की)

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर समय का लेख नहीं होकर अन्य लेख है।

2–3. श्री जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा विराजमान है।

4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर 2058 फाल्गुन वदि 5 का लेख है।

5. श्री मुनिसुव्रत स्वामी की 9" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2058 का लेख है।

6. श्री आदिनाथ भगवान की 14" ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2058 फाल्गुन वदि 5 का लेख है।

7. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 7" आकार का है। इस पर श्रीमती कुंतीबाई का लेख है :–

8. श्री अष्टमंगल यंत्र 6"x3.5" का है। इस पर श्री कांतिलाल जी ––––––का लेख है।

9–12 श्री जिनेश्वर भगवान की 5" ऊँची चार प्रतिमाएं है। इन सभी प्रतिमाओं समसरण बना है। लेख लांछन स्पष्ट नहीं है।

13. श्री चतुर्विंशति 14" ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण सोमवार का लेख है।

वेदी पर पबासन देवी 6" ऊँची प्रतिमा एक आलिएं में स्थापित है।

जिन मंदिर में बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में

श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 17" ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे लेख पर पेन्ट लग जाने से दब गया है। फिर भी जो पढ़ने में आता है। वह है :– श्रीमती जयन भाई भीमचन्द जैन भंसाली भीनमाल

जिन मंदिर के बाहर निकलते समय बाईं ओर एक आलिए में :–

श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 17" ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे भी वही लेख उत्कीर्ण है जो गौमुख यक्ष प्रतिमा पर है।

सभा मण्डप के दाहिनी ओर

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21" व सर्प के छत्र तक 25" ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है :–

"वि.सं. 2058 फाल्गुन वदि 5 श्री धुलेवानगरे श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन बिंब इदं प्रतिष्ठितं तपा. आ. विजय प्रेमसूरीश्वर **भुवनभानु सूरीश्वर** पट्ट आ. विजय जयघोषसूरि आ. वि. जितेन्द्रसूरिभ्या महामहोत्सव पूर्वक कारितं च बाकली निवासी कोठारी मृगराज भार्या मूलीबेन श्रेयोर्थ पुत्र भंवरलाल भार्या विमलादेवी पुत्र पुष्प अम्बाति सरितादेवी

सभामण्डप के बाईं ओर :–

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21" ऊँची व सर्प के छत्र तक 25" ऊँची है। इस पर लेख है :–

वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 5 रवि वारे

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिन बिंब इदं प्रतिष्ठितं तपा. आ. विजय प्रेमसूरि भुवन भानुसूरि पट्ट आ. वि. जयघोषसूरि आ.वि. जितेन्द्रसूरिभ्या महामहोत्सव पूर्वक कारित च राकेशकुमार मीनाक्षी बेन प्रतीक हर्षील बेटा–पौता प्रपौत्र स्व. श्री गोर्धनलाल जी चन्द्रकांता ब्रजलाल जी गुलाबबाई पुनमचंद जी लक्ष्मीदेवी नवलचंद जी ऋषभदेव (राज.) कन्हैयालाल कमलादेवी जमाई राजकुमार जी

मंदिर में प्रवेश करते समय बाई ओर :–

श्री नाकोड़ा भैरवः की पीत पाषाण की 17" ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख हैः–

धूलेवानगरे श्री नाकोड़ा भैरव मूर्ति प्रतिष्ठितं तपा. आ. विजय प्रेमसूरि भुवनभानुसूरि पट्टे आ. वि. जयघोषसूरि आ.वि. जितेन्द्रसूरिभ्याः कारितं च रामुतमल कुंदनमल मुकेश निकेश संजय विपिन ऋषभ मालव शाश्वत बेटा पोता सूरजमल जी निवासी ताना (राज.)

श्री नाकोड़ा भैरवः की मूर्ति चमत्कारी है आरती के समय प्रतिमा के ऊपर का छत्र

हिलता दिखाई देता है। कई बार डमरू व छत्र से कंकू गिरते भी देखा है। दर्शनार्थी की मनोकामना पूरी होती है।

मंदिर में प्रवेश करते समय दांई ओर :–

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 17" ऊंची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है :–

श्री पद्मावती देवी मूर्ति प्रतिष्ठितं तपा. आ. विजय प्रेमसूरि भुवनभानुसूरि पट्टे आ. वि. जयघोषसूरि आ.वि. जितेन्द्रसूरिभ्याः कारितं च भंवरलाल जी पुष्पत साहिल आर्यन विमलादेवी हीराबेन पिंकी सोनल बेटा–पोता मगराज जी हजारीमल जी कोठारी बाकली सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण 5 सभामण्डप में श्री सम्मेदशिखरजी गिरनार जी सिद्धाचल जी के पट्ट लगे है।

परिक्रमा क्षेत्र में जाते समय बाई ओर सामने एक देवरी में पादुका चौकी 21"x19" गोलाई के आकार पर पादुका स्थापित है इसके ऊपर श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 29" ऊँची खड़ी प्रतिमा व श्री श्रेयांस राजा की श्वेत पाषाण की 28" ऊँची खड़ी प्रतिमा है। श्रेयांस राजा भगवान को इक्षु रस का पारणा कराने का दृष्य है। इनके नीचे पट्टशाला जैन श्वेताम्बर जैन मंदिर केशरिया जी उत्कीर्ण है। दोनों ओर की दीवार समवसरण व अष्टापद जी के पट्ट बने है।

परिक्रमा में दाईं ओर– (देवरी में) :–

श्री पुण्डरीक स्वामी की श्वेत पाषाण की 20" ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है श्री केशरिया जी तीर्थ धुलेवानगरे पट्टशाला मंदिर श्री पुण्डरीक गणधरे बिंबं मिदं प्रतिष्ठित वि.सं. 2063 फागुण वदि 5 बुधवारे तपा. आ. श्री भुवन भानु सूरि पट्टालंकार **जय घोष सूरि** आ. हेमचन्द्र सूरि शिष्य प्रशिष्य प पू. प अपराजित विजय म. मु सत्वभूषण विजय म. प.पू. आ. जितेन्द्र सूरि शिष्य प्रशिष्य निपुणरत्न वि. म. मु राज वि.म. आदिभिः प्रतिष्ठित कोठारी मानमल्लेन भार्या मंजुला पुत्र सुरेश चन्द, पुत्रवधु–

विशेषता :– सभी प्रतिमाओं के पीछे स्वर्ण रेखाओं में रेखांकित पछवाई बनी हुई है जिससे प्रतिमाओं एवं मंदिर की सुंदरता बढ़ गई है व प्रतिमाएं आकर्षक दिखाई देती है।

इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन कृष्णा 5 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख स्थानीय स्तर से श्री राकेश जी मलासिया करते हैं।

मोबाईल नं. 9414976483

मुम्बई श्री कांतिलालजी संघवी दूरभाष सं. 022–23737877

श्री ऋषभदेव भगवान के चरण-पादुका मंदिर, ऋषभदेव

यह मंदिर ऋषभदेव बस स्टेण्ड से पूर्व की ओर 1 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस चरण–पादुका के दर्शन करने के लिए सीढिये चढ़कर जाना होता है। एक देवरी में स्थापित है।

यह चरण–पादुका श्याम पाषाण की पट्टी पर स्थापित है। इस पर लेख है :–

'स्वास्ति श्री संवत् 1873 वर्षे शाके 1739 प्रवर्तमाने मासोत्म मासे शुभकारी ज्येष्ठं मासे शुभे शुक्ल पक्षे चतुर्दशि तिथों गुरूवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्टागार गौत्रे श्रावक पुन्य प्रभावक श्री देवगुरू भक्तिकारक श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक शाह शंभुदास तत्पुत्र शिवलाल अबां विदास तत्पुत्र दौलतराम ऋषभदास श्री उदेपुर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल भट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री श्री विजय जिनेन्द्र सूरिभिः उपदेशात् पं. मोहनविजयेन श्री धुलेवा नगरे। भण्डारी दलीचंद आंगुछइं' नीचे उतरते हुए बांई ओर एक मंदिर बना है जिनमें रायण का वृक्ष है। जिसका तना फटा हुआ है। कहा जाता है कि श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा इसी वृक्ष में से प्रकट हुई और बाद में उसका मंदिर में बिराजमान कर प्रतिष्ठा कराई। इस गर्भ स्थान पर यात्रीगण भावना सहित केसर के छींटे डालकर पूजा करते हैं।

नीचे उतरते हुए दाईं ओर एक बड़ा सभा भवन बना हुआ है। सामने ही श्री ऋषभदेव भगवान का विशाल चित्र लगा है। यात्री गण दर्शन करते हैं। यह सभामण्डप तीनों ओर से खुला है, दरवाजे हैं। प्रतिवर्ष मंदिर प्रांगण से वरघोड़ा निकलता है और इस स्थान पर विश्राम होता है, पूजा पढ़ाई जाती है और पुनः मंदिर की ओर प्रस्थान करता है। ऐसा भी कहा जाता है कि प्रतिमा को वृक्ष के स्थान से लाकर सर्वप्रथम इसी स्थान पर विश्राम कराया था।

इसकी व्यवस्था देवस्थान विभाग द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : 0294–2576130

श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, खेरवाड़ा

यह धूमटबंद मंदिर उदयपुर से 80 किलोमीटर, ऋषभदेवजी से 18 व डूंगरपुर से 25 किलोमीटर नेशनल हाइवे नम्बर 8 पर कस्बे के मध्य मोचीवाड़ा मौहल्ले में स्थित है। यह मंदिर करीब 150 वर्ष पुराना बताया गया है। पूर्व में श्वेताम्बर समाज के सदस्य अधिक रहते थे, वे डूंगरपुर चले गये, केवल एक परिवार यहाँ निवास करता है, वही मंदिर की देखरेख करता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है–

   संवत् 1957 – – – – – जैचंद हरकजी श्री आदिनाथ – – – – –

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के बाएँ) की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है– संवत् 1957 – – – – – श्री पारसनाथ – – – – –

3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएँ) श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है – संवत् 1957 श्री पारसनाथ – –

उत्थापित चल प्रतिमाएँ (धातु की)

1. श्री सिद्धचक्र यंत्र 6''x5'' पीतल का है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री अष्टमंगल यंत्र 6''x3'' पीतल का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3–4. दो त्रिकोण यंत्र (ताम्बे के) 3.5'', 1.8'' ऊँची है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5–6. दो साधारण यंत्र 2'' ऊँचाई के ताम्बे के हैं। इस पर कोई लेख नहीं है।

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय दाईं ओर एक आलिए में श्री यक्षिणीदेवी श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। नीचे की पट्टी अनगढ़त पत्थर की है।

अन्य आलिए में श्री जिनदत्तसूरि व श्री जिनकुशलसूरि के चरण पादुका स्थापित है। इसकी पट्टी के किनारे संवत् 1952 का लेख है।

जिसमें बापना परिवार द्वारा प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख है।

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर –

श्री धरणेन्द्रदेव की साधारण पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। सभा मण्डप में जीर्णोद्धार का व पुनः स्थापना का लेख है। खेरवाड़ा नगरे विक्रमी चन्द्ररिपु गगन नमन मिते 2061 वर्षे मार्गशीर्ष द्वितियां श्रीआदिनाथे प्रभो तीनो बिबां प्रतिष्ठा तपागच्छी शासन सम्राट नेमीसुरीश्वर पट्टालकांर अमृतधर्मधुरन्धर मुनि शिष्येष्य पुन्यार्थ श्री विजय कुन्दकुन्दाचार्य – – – वार्षिक ध्वजा मार्गशीर्ष की द्वितिया को चढ़ाई जाती है व मंदिर की देखरेख श्री कैलाशजी मलासिया करते है।

सम्पर्क सूत्र – फोन 220076, मोबाइल नं. – 9413021014

अपने मत-पंथ या सम्प्रदाय के लिये लोग जितना मिटते-मरते हैं। उसका अंशभर भी प्रयत्न 'धर्मतत्त्व' को समझने का नहीं हो रहा। हकीकत में मत पंथ-सम्प्रदाय तो बाह्य व्यवस्थाएं है। ध्येय तो अन्तःकरण की शुद्धि का होना चाहिये। वही धर्म है। उसी के पास मनुष्य को दुःखों से मुक्त करने का सामर्थ्य है। सही बोध से युक्त धर्म ही महत्त्वपूर्ण और कल्याणकारी होता है। जो इस सत्य को छोड़कर पंथ- सम्प्रदाय के दुराग्रह और विवादों में उलझते हैं। वे धर्म के मार्ग से भटक जाते हैं।

जैन मंदिर, जावर

जावर ग्राम उदयपुर– अहमदाबाद मार्ग के मध्य उदयपुर से 35 किलोमीटर दूर टीडी ग्राम से भीतर 7 किलोमीटर दूर स्थित है। जावर रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर दूर है।

मेवाड़ अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ है और इन पहाड़ियों में कई खनिज पाये जाते हैं। मेवाड़ के अन्तर्गत यह जावर खान महत्वपूर्ण है। यहाँ पर चांदी, जस्ता, सीसा प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इस नगरी का प्राचीन नाम **योगिनीपट्टन (योगिनीपुर)** था। इस नगर के प्राचीनता का मूल्याकंन तो नहीं किया जा सकता लेकिन यह सत्य है कि औद्योगिक केन्द्र के किनारे या आस–पास जैनी श्रेष्ठि रहते आ रहे हैं और चौथी शताब्दी में यहाँ संत श्रेयमनगिरि रहने का उल्लेख आता है (श्यामलदास) और योगिनीपट्टन जैन श्रेष्ठियों के लिए एक तीर्थ स्थल होंने का उल्लेख आता है (तीर्थमाला स्तवन) योगिनीपुर का उल्लेख स्पष्ट रूप से होता है और योगिनीपुर के आधार पर जावर में स्थित माता का नाम योगिनी माता मंदिर रहा है।

पहाड़ी पर किला बना है, उस ओर दृष्टिपात करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि चितौड़ का किला जावर के किले की नकल है। जो किला हमें दिखता है, वह मध्यकाल का निर्मित होना बताया है। यदि इसको देखा जाए तो किले की इस दीवार के नीचे एक दीवार और बनी है। उसी दीवार पर नूतन दीवार निमित्त की गई है। इस क्षेत्र की पहाड़ियों को जावरमाला भी कहा जाता है। इसी क्षेत्र में सांभोली ग्राम से इतिहासकार गौरीशंकर ओझा ने एक शिलालेख महाराणा शिलादित्य के समय (संवत् 703) का प्राप्त किया है जो अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है। जावर एक प्राचीन नगर रहा है। यहाँ की सभ्यता उदयपुर के समीप आहाड़ की सभ्यता के समान है और उसी प्रकार के बर्तन आदि भी यहाँ उपलब्ध हुए हैं।

जैन श्रेष्ठियों की दृष्टि से ऐसी दंतकथा है कि यहाँ पर चौथी शताब्दी में जैन श्रेष्ठी रहते थे और **श्रेयमनगिरी** (श्रेयमन) नाम के एक संत निवास करते थे। उस समय जावर को योगिनीपट्टन (योगिनीपुर) के नाम से जाना जाता था जिसका वर्णन तीर्थमाला स्तवन में आता है। (डॉ. एन.सी. चक्रवती के अनुसार ए.एस.आई. रिपोर्ट 1935)

मेवाड़ के गुहिल वंशीय के शासक के कई ताम्बे के सिक्के आगरा व अन्य स्थानों पर पाये गये हैं, जो चौकोर थे और बाद में चांदी के अर्ध गोलाकार के आकार के बने हैं। ऐसी मान्यता है कि इसकी टकसाल जावर में थी। (राजपुताना का इतिहास द्वारा गौरीशंकर ओझा)

महाराणा शिलादित्य के लेख जो आठवीं शताब्दी के हैं, यहाँ की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बतलाते हैं। (राजपुताना का इतिहास द्वारा गौरीशंकर ओझा) इसमें यहाँ की देवी चन्द्रिका का वर्णन किया है तथा यह एक औधागिक केन्द्र रहा था, जहाँ बाहर से व्यापार होता था। **चन्द्रिका माता ही आज की जावरमाता है।** महाराणा कुंभा द्वारा यहाँ से राजस्व प्राप्त करने के लिए कर्मचारी नियुक्त किये थे। (महाराणा कुंभा द्वारा सोमानी) जो लेख 7वीं शताब्दी का है, इस लेख के प्रथम भाग में उस समय की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को बतलाया है। (राजस्थान का इतिहास द्वारा श्री ओझा) लेख के मध्य भाग में राजाओं का वर्णन किया गया है। इसी समय में इस नगर में महाजन

(जैन समूह) का मुखिया जैक (जैतक) के आने का उल्लेख है। अन्त में यह भी उल्लेख है कि जैतक ने अख्यनागिरि देवी की प्रतिष्ठा कराई। अख्यनागिरी किसी पहाड़ी का नाम रहा होगा।

जैसाकि वर्णन किया है कि जैन श्रेष्ठी चौथी शताब्दी में रहा करते हैं। उस समय संभवतया जैन मंदिरों के भी निर्माण हुये होंगे। महाराणा लाखा के शासनकाल तक यह नगर समृद्धिशाली रहा और बाद में 16वीं शताब्दी तक जावर की व्यापारिक केन्द्र के नाम से ख्याति रही व सैकड़ों जैन मंदिर पाये जाते थे। जहाँ खुदाई से मूर्तियाँ प्राप्त हो रही है, वह कला देखने योग्य है। महाराणा रायमल के शासनकाल में जावर का पट्टा महाराणा की बहिन रमाबाई के नाम किया गया। रमाबाई की शादी जूनागढ़ (गिरनार) के यादववंशी मंडलीक के साथ हुई थी लेकिन उनका वैवाहिक जीवन सुखमय न होने के कारण अपने पिता के यहाँ आ गई और उन्हें इस गांव का पट्टा लिख दिया। रमाबाई संगीत शास्त्र में निपुर्ण थी, व धर्म के प्रति अनुराग रखती थी। उन्होंने भी कुंभलगढ़ व जावर में मंदिर एवं तालाब बनवाये।

16वीं शताब्दी के बाद यहाँ की खानें बंद हो जाने से यहाँ के श्रेष्ठिजन नगर छोड़कर अन्यत्र जाने लगे और नगर उजाड़ हो गया। बाद में महाराणा सज्जनसिंहजी के समय पुनः इन खानों का कार्य प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में यह गांव उजड़ा हुआ है। केवल दूर–दूर तक भील बस्ती देखने को मिलती है। प्राचीन मंदिर, प्रतिमाएँ, वास्तुकलाएँ जगह–जगह खण्डित आकार में देखने को मिलती है। वर्तमान में जैन मंदिर के जो लेख उपलब्ध हुए हैं जो इस प्रकार हैं –

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर प्रशस्ति

संवत् 1478 वर्षे पौष शुद 5 राजाधिराज श्री मोकलदेव विजय राज्ये प्रागवाट शा. माना मा. फनी सुत शा. रतन मा. सादुपुत्रोण श्र शत्रुजंय गिरिनार अर्बुदजीरापल्ली चित्रकूटादि तीर्थ यात्रा कृता श्री सध मुख्य सा. धणपालेन सा. हांसूपुत्र सा. हाजा वेजा धाना वधू देऊभाऊ चाईनाऊ धाईपौत्र देवा नरसिंग पुत्रिका पुनी पुरी नरगत चमकू प्रभूति कुटुम्ब परिवृतेन श्री शाति नाम प्रासोद कारितः प्रतिष्ठितः स्तोयथे श्री देवसुंदरसूरि पट्ट पूर्वावतादि नामक गच्छनायक निरूपण महिमानिधान युगपधान समान श्री श्री श्री सोमसुदरसूरिभिः भट्टारक धुरन्धर श्रीमुनिसुन्दरसूरि, श्री जयचन्दसूरि, श्री भुवनसुदरसूरि, श्रीजिनसुदरसूरि, श्री कीर्तिसूरि, श्री विशालराजसूरि, श्री रत्नशेखरसूरि, उदयान्देसूरि, श्री लक्ष्मीसागरसूरि महोपाध्याय श्री सत्यशेखर गणि

श्री सुरसुंदर गणि श्री गणि श्री सूर सुन्दर

श्री शांतिनाथ चेत्यं कारितां ————————————————————————————

एक देरासर में :–

संवत् 1489 फागुन शुद 3 दिन उत्केश जातीयं सा. पद्मा भार्या पदमदे पुत्र गोइंद भार्यों गऊर दे सुत सा. आवा सा. सांगण सहदेव तन्यछये सा. सहदे भार्या पोइ पुत्र श्रीधरईसर पुत्री राणि प्रभृति कुटुम्बयुतेन भ. कान्हा कारितं प्रासादे स्वश्रेयार्थ श्री सुपार्श्व जिनयुगदेव कुलिका कारिता प्रतिष्ठित

श्री खरतरगच्छीय श्री जिनसागरसूरिभिः ————

एक मंदिर के स्तम्भ पर संवत् 1657 का लेख है जो संघ यात्रा का प्रतीक होता है।

एक खण्डित प्रतिमा पर लांछण ऋषभ है वे श्री आदिनाथ बिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है।

एक मंदिर के खेला मण्डप में प्रवेश द्वार के पास प्राचीन अपठनीय लेख है। एक मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर भी अस्पष्ट लेख श्री जिन सिंह सूरि पट्टे श्री जिन सागर सूरि जी का है।

आज अन्य आवश्यकता है कि इन मंदिरों की कला की, प्राचीनता का संरक्षण करने की। इस पर विचार करना चाहिए। समाज के प्रमुख लोगों से साधु–भगवन्तों से संदर्भित वार्ता भी हुई। स्पष्ट हुआ कि वहाँ कोई जैन बस्ती नहीं है? क्या राणकपुर में, मुछाला महावीरजी में जैन बस्ती है?

दो मंदिर का संरक्षण श्री लालचन्द छगनलाल जी जैन द्वारा किया गया है। इन दोनों मंदिर के चारों ओर विशाल भूखण्ड के चारो ओर चार दीवार (कोट) बनाकर फाटक लगाई है। यह कार्य उत्तम है।

जावर के प्राचीन जैन मंदिरों का चित्रांकन

जावर के प्राचीन जैन मंदिरों का चित्रांकन

श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, सलूम्बर

यह प्राचीन शिखरबंद विशाल दो मंजिला मंदिर है, कितना प्राचीन है, मूल्याकंन नहीं किया जा सकता। इतिहास के आधार पर यह प्राचीन नगर है और इसकी जागीरी महाराणा उदयसिंह ने संवत् (1592–1628) श्री कृष्णदास को दी और इन्हें रावल की उपाधि दी गई और ये सिसोदिया चूण्डावत कहलाए। पूर्व में यह मंदिर श्री पाश्वर्नाथ भगवान का था और मंदिर में प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख संवत् 1542 का है, इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मंदिर 500 वर्ष प्राचीन होगा तथा इतिहास के आधार पर भी संवत् 1592.1628 के बीच जागीरी देने के पूर्व ही जैन श्रेष्ठिगण निवास करते रहे होंगे। अतः मंदिर भी होना स्वाभाविक है। अतः यह मंदिर प्राचीन होना चाहिए। मंदिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था से होने के कारण इसका जीर्णोद्धार कराया व नूतन प्रतिमा श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिष्ठा संवत् 2038 में आचार्य श्री देवसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं –

1. श्री कुंथुनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है– स्वास्ति श्री वि. सं. 2038 वर्षे माध शुक्ला 14 रविवासरे– रविपुष्यामृत योगे सलूम्बर नगरीय – – – हुमड़ जातीय मात्राश्वेर गोत्रीय जनक श्री गोवर्धनलालजी ध.प. कुंवरबेन सुत कन्हैयालाल पुत्रा सनतकुमार ध.प. अशु –– पुत्रा कैलाशप्रसाद ध.प. जय श्री पु. अरविन्दकुमार ध.प. कल्पना पुत्रा कमलेश, राजेश – ––––– पट्टघर हेमचन्द सूरि – – – – – – लेख पीछे की ओर होने से सम्पूर्ण लेख अपठनीय रहा।
2. श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएँ) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है–
3. सं. 1920 शाके 1785 प्रवृर्तमाने मासोतमासे माध मासे शुक्ल पक्षे तिथे पंचभ्यौ श्री शांतिनाथ जिन बिंब कारापिता – – – – – विजय धर्णेन्द्रसूरि – – – – –
4. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएँ) श्वेत पाषाण की प्राचीन प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।